छायावादोत्तर कालीन हिन्दी ग़ज़ल में सवेदना और शिल्प

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,
आगरा से हिन्दी में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तावित शोध प्रबंध की
रूपरेखा

शोध निर्देशक | **शोधार्थी**

डॉ. रंजना पांडेय
असिस्टेंट प्रोफेसर

विकास कुमार गौतम

हिंदी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा 282005

2022

छायावादोत्तर कालीन हिंदी ग़ज़ल की परिचयात्मक प्रष्ठभूमि –

हिन्दी में ग़ज़ल कोई नई साहित्यिक विधा नहीं है। हिन्दी कविता के मानिन्द हिन्दी ग़ज़ल का सूत्रपात करने का श्रेय भी अमीर खुसरो को ही जाता है।उन्होंने फ़ारसी साहित्य की इस प्रमुख विधा का अंगीकरण कर के नई परम्परा की नींव रखी। हिन्दी ग़ज़ल के सफ़र में कबीर से मील के पत्थर मिलते हैं। डॉ. गोविंद त्रिगुणायत ने उनकी रचना,

हमन हैं इश्क मस्ताना
हमन दुनिया से यारी क्या
रहें आज़ाद या जग में
हमन दुनिया से यारी क्या

को हिन्दी की पहली ग़ज़ल माना है।कुछ विद्वानों ने सरहपा की तुकांत रचनाओं को फ़ारसी के बैत या शेर माना है।अतः यह कहना अनुचित होगा कि हिन्दी में ग़ज़ल नई विधा है। हिन्दी भी ग़ज़ल की एक दीर्घ परंपरा रखती है।

फ़ारसी साहित्य में ग़ज़ल,आश्रित शायरों द्वारा सुलतानों के मनोरंजन हेतु माशूकाओं के बोसों का वर्णन करने में प्रयोग में लाई जाती थी।यही कारण था कि हिन्दी के शुद्धतावादी साहित्यकारों ने इसे अंगीकृत करना हिंदी साहित्य की प्रगतिशील चेतना के लिए घातक माना।इसमें राम चंद्र शुक्ल से ले कर हज़ारी प्रसाद द्विवेदी और राम विलास शर्मा भी शामिल हैं। जब शमशेर बहादुर सिंह ने ग़ज़ल को रूमानियत से निकाल कर समाज ,जीवन और समग्रता से जोड़ने का साहस किया तो राम विलास शर्मा ने कहा कि ग़ज़ल तो दरबारों से निकली हुई विधा है जो प्रगतिशील मूल्यों को अभिव्यक्त करने में अक्षम है। परन्तु आधुनिक हिन्दी कवियों के समक्ष ग़ालिब और अन्य रीतिकालीन कवियों के कई उदाहरण थे जिन्होंने ग़ज़ल को श्रृंगार ही नहीं अपितु हयात की पीड़ाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनाया और जीवन की अनेक परतों को उधेड़ उधेड़ कर देखा।इस तरह ग़ज़ल की सामाजिक पृष्ठभूमि तैयार होने लगी।हिन्दी ग़ज़लकारों द्वारा ग़ज़ल के पुराने स्वरूप को ख़ारिज कर के उसके सहभागिता के स्वर को मुखर करने पर स्वयं फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ ने कहा - **" ग़ज़ल को अब हिन्दी वाले ही जिंदा रखेंगे, उर्दू वालों ने तो इसका गला घोंट दिया है।"** हिन्दी में ग़ज़ल कहना महज़ एक प्रयोग नहीं था,यह अभिव्यक्ति का तकाज़ा था। बदलते समय में जब हिन्दी अभिव्यक्ति की समस्या से जूझ रही थी,तो हरेराम समीप ने कहा - **" बदलते हालात बतलाना ज़रूरी हो गया, इसीलिए मुझको ग़ज़ल गाना ज़रूरी हो गया। "**

हिन्दी साहित्य में ग़ज़ल विधा की आवश्यकता का आभास आधुनिक काल के आरंभ से ही होने लगा था।भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं का सूत्रपात करने के साथ ही ग़ज़ल को एक महत्वपूर्ण काव्यरूप माना।उन्होंने स्वयं भी ग़ज़लें कहीं और आगामी रचनाकारों को ग़ज़ल लिखने के लिए प्रेरित भी किया।उनकी एक ग़ज़ल के कुछ एक शेर निम्नलिखित हैं।

क्यों न दावा करे मसीहा का
मुर्दे ठोकर से वो जिला कर के
दिल मेरा ले गया दगा कर के
बेवफ़ा हो गया वफ़ा कर के

ग़ज़ल परंपरा में आगे कई महान हस्ताक्षरों का आगमन हुआ जिनमें हरियौध,जयशंकर प्रसाद,निराला,राम नरेश त्रिपाठी आदि कवि शामिल हैं।निराला में सामाजिक और राजनीतिक चेतना प्रखर थी जो कविताओं के साथ साथ उनकी ग़ज़लों में भी दृष्टिगोचर होती है।

किनारा वो हमसे किए जा रहे हैं,
दिखाने को दर्शन दिए जा रहे हैं,
खुला भेद, विजयी कहाए हुए जो,
लहू दूसरों का पिये जा रहे हैं ।

साहित्य समाज की मनस्थिति का प्रतिबिंब होता है।जब देश में स्वाधीनता संग्राम जैसा विराट आंदोलन व्याप्त हो तो हिन्दी ग़ज़ल इससे कैसे अछूती रह सकती थी। जगदंबा प्रसाद मिश्र ' हितैषी ' की ग़ज़लों में देशभक्ति का तेवर कुछ इस प्रकार व्यक्त हुआ है।

कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज्य देखेंगे
जब अपनी ही ज़मीं होगी जब अपना आसमां होगा
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा

उनकी ग़ज़लों में युगीन चेतना और समाज के दुख का मुखर स्वर देखने को मिलता है।किन्तु ये रचनाकार उर्दू की परंपरागत प्रतीक योजना और शब्दावली से बाहर नहीं आ सके और ग़ज़ल हिन्दी भाषा में कुछ फुटकल रचनाएं दे कर हाशिए की जानिब रुख करने लगी। ग़ज़ल अभी तक पूर्ण रूप से हिन्दी की विधा नहीं हो पाई थी।संभवतः शमशेर बहादुर सिंह ने ही उर्दू के पारंपरिक सांचे को चूर करने की पहल की।यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि उन्होंने ही हिन्दी की पेशानी पर ग़ज़ल का टीका लगा कर अभिषेक किया।हर नई परंपरा अपनी पूर्ववर्ती परंपरा से ही जीवन ग्रहण

करती है परंतु यह रचनाकार का दायित्व है कि वह पुरानी परंपराओं का अनुपालन करते हुए भी युगीन सत्य को अभिव्यक्त कर सके।शमशेर ने इस दायित्व को बखूबी निभाया।राम विलास शर्मा ने ग़ज़ल को एक सामंती विधा माना था।शमशेर ने प्रतिवाद करते हुए कहा कि यदि रचनाकार प्रगतिशील है तो उसकी रचनाएं सामंती हो ही नहीं सकतीं और यदि रचनाकार सामंती मानसिकता रखता है तो इसमें विधा का दोष नहीं। इसमें कोई दो राय नहीं कि शमशेर ने ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक सरोकार और जीवन सत्य को अभिव्यक्त किया है।

ज़माने भर का कोई इस कदर अपना न हो जाए
कि अपनी ज़िंदगी खुद आपको बेगान हो जाए
सहर होगी ये रात बीतेगी और ऐसी सहर होगी
कि बेहोशी हमारे देश का पैमाना हो जाए

समाज के संघर्ष की गूंज त्रिलोचन के ग़ज़ल संग्रह ' गुलाब और बुलबुल ' में भी देखने को मिलती है।शमशेर ने हिन्दी ग़ज़ल परंपरा की जो पगडंडी हमवार की थी,दुष्यंत ने उसे राजपथ बना दिया। जब आम जन की पीड़ा और चीख बेमानी सियासी नारों में बदल दी जाती है तो समाज दुष्यंत की ग़ज़लों से विद्रोह और आक्रोश की आग लेता है।दुष्यंत की ग़ज़लें सिर्फ़ जनता के बिखरे स्वप्नों की निराशा और विद्रोह की गूंज नहीं है, वे बहरूपिये नेताओं के भाषणों पर तालियां पीटने वालों को भी फ़टकार लगाते हैं।

आज सड़कों पर लिखे तू सैकड़ों नारे न देख
घर अंधेरा देख तू आकाश के तारे न देख

आज़ादी के बाद सत्ता पर भ्रष्ट,अवसरवादी और नालायक लोग पांव जमा कर बैठ गए थे।मोहभंग की दशा को दुष्यंत कुमार ने निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया -

खड़े हुए थे अलावों की आंच लेने को
सब अपना अपना हाथ जला कर बैठ गए

आज़ादी के बाद हमने जिन सियासी फ़रेबियों को अपना प्रतिनिधि चुना, वे लोभ और भ्रष्टाचार की साक्षात मूरत बनते गए।वे भूखों का पेट नहीं,अपनी तिजोरियां भरने में व्यस्त हुए।समाज की इस दुर्दम परिस्थिति में दुष्यंत ने व्यंग्यपूर्वक लिखा -

भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ

आज कल दिल्ली में है ज़ेर ए बहस ये मुद्दा

दुष्यंत कुमार ने मध्यमवर्गीय समस्याओं को उकेरा है तो वहीं,उनकी परंपरा के स्वर्णिम हस्ताक्षर अदम गोंडवी ने निम्नजातीय लोगों और किसानों को अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया है ।वे कहते हैं -

भूख के अहसास को शेरो सूखन तक ले चलो
या अदब को मुफ़लिसों की अंजुमन तक ले चलो

वे ग़ज़ल को माशूक नहीं, बेवा के माथे की शिकन तक ले जाना चाहते हैं।पेट भरा होने पर ही मनुष्य जीवन की अन्य सुविधाओं का उपभोग कर सकता है।भूख की अग्नि में सभी दिलकश नज़ारे ख़ाक हो जाते हैं। वे कहते हैं -

घर के ठण्डे चूल्हे पर अगर खाली पतीली है
बताओ कैसे लिख दूं धूप फागुन की नशीली है

उनकी पैनी नज़र से समाज का कोई मुद्दा नहीं बच पाता। वे सियासत,दलाली को बढ़ावा देने वाली व्यवस्था, अफ़सरशाही और सांप्रदायिकता पर कलम चलाते हैं।

काजू भुने प्लेट में विश्की ग्लास में
उतरा है रामराज विधायक निवास में

गावों से शहर की ओर खिंचे जाने वाले लोगों की दुखद कथा को व्यक्त करते हुए कुंवर बेचैन लिखते हैं -

हम इतनी कर के महनत शहर में फुटपाथ पर सोये
ये महनत गांव में करते तो अपना घर बना लेते

आम जनता के वोटों से चुने हुए प्रतिनिधि जब छल की साक्षात मूरत बन जाते हैं तो वहां ज्ञान प्रकाश 'विवेक ' का यह शेर उल्लेखनीय हो जाता है -

सूरज से हम बचे तो जुगनू से जल गए
जिन पर किया भरोसा वे लोग छल गए

सांप्रदायिक मनमुटाव जब हिंसा का रूप धारण कर लेते हैं तो नरेंद्र कुमार कहते हैं -

एक ने मंदिर उछाला एक ने मस्जिद का नाम
खूब खाई पत्थरों की मार अपनी ज़िंदगी

आधुनिक हिन्दी के ऐसे कई ग़ज़लकार हैं जो ग़ज़ल के लोच को महत्व देते हुए, परंपरा को नए अर्थ देने का भी प्रयास

करते हैं।इन ग़ज़लकारों में राजेश रेड्डी, विज्ञानव्रत, गिरिराज शरण अग्रवाल, दीक्षित दनकौरी, हनुमंत नायडू, शिवओम अंबर,सुरेंद्र चतुर्वेदी और अन्य कई ग़ज़लकार शामिल हैं। राजेश रेड्डी की ग़ज़लों में व्यष्टि का समष्टि में रूपांतरण होने का भाव दृष्टिगोचर होता है। उनकी ग़ज़लों में 'हम' सिर्फ़ वे नहीं पूरा समाज है। हनुमंत नायडू ने अपनी ग़ज़लों में कहीं कहीं अंग्रेज़ी का प्रयोग भी किया है।वे सामाजिक विषमता की लाचारी पर व्यंग्य करते हैं। वे कहते हैं कि इस गुणवान लोगों की बस्ती में एक ईमान ही बदचलन है। बल्लि सिंह चीमा की ग़ज़लों में व्यंग्य का पुट बेहद सुंदर लगता है। वे कहते हैं कि अपने देश में आंधियां,घर तोड़कर बसाने का नारा लगाती हैं।गिराराज शरण कहते हैं कि ग़ज़ल का समाजीकरण और राजनीतीकरण करना आसान है,मगर करने के बाद भी उसे ग़ज़ल बनाए रखना अत्यंत मुश्किल है।इस में कोई दो राय नहीं कि समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में दुष्यंत के बाद जो प्रगति हुई,वो पहले नहीं हो पाई थी। इसमें कई ग़ज़लकारों का योगदान है। आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की श्रीवृद्धि करने वाले कुछ और नाम इस प्रकार हैं – कमलेश भट्ट,प्रदीप चौबे, डॉ. कीर्ति काले, यश मालवीय नित्यानंद तुषार, हरीश निगम, सावित्री परमार आदि।उनके योगदान से हिन्दी ग़ज़ल ने न केवल समाज से सरोकार स्थापित किया बल्कि भाषा और शिल्प के धरातल पर भी झंडे गाड़े हैं।अभिव्यक्ति का यह फ़न जीवन के सच्चे अनुभवों से ही आता है और यही हिन्दी ग़ज़ल की विशेषता है। शमशेर के पहले ग़ज़ल में जो हिन्दी और उर्दू का भाषाई फ़र्क था, हिन्दी ग़ज़ल की निरंतर विकासशील परंपरा ने क्षीण कर दिया।आज हिन्दी ग़ज़ल अपनी सहभागिता के मारफ़त रूमानियत से निकल कर युगीन विषमताओं से जुड़ चुकी है और हिन्दी साहित्य की एक शक्तिशाली विधा के रूप में प्रतिष्ठित है जो सामाजिक और राष्ट्रीय मुद्दों को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है। हिन्दी में ग़ज़ल की परंपरा चाहे जहां से शुरू हुई हो, प्रेम उसकी रगों में मौजूद रहा है।ग़ज़ल एक प्रेम काव्य है। कई विद्वानों ने ग़ज़ल का अर्थ स्त्रियों से बातें करना लगाया है। कारण यही रहा होगा कि हिन्दी उर्दू ग़ज़लों में प्रेम शिद्ददत के साथ मौजूद रहा है। यह अलग बात है कि धीरे-धीरे ग़ज़ल ने अन्य सामाजिक मुद्दों को भी अपने में समाहित कर लिया। लेकिन तब भी प्रेम अपनी जगह सुरक्षित रहा। समूचे आधुनिक काल में यह प्रवृति मुखर रही। आधुनिक काल की ग़ज़ल परंपरा भारतेंदु से शुरू होती है। भारतेन्दु ने प्राय: हिन्दी गद्य और पद्य की तमाम विधाओं को अपनाया। उन्होंने रसा उपनाम से ग़ज़लें लिखीं। ज्ञानप्रकाश विवेक ने उनकी ग़ज़लों का अध्ययन करते हुए लिखा है कि भारतेन्दु की ग़ज़लें बेशक प्रेम परक हैं और उनके शेरों में शेरीयत, लोच और नाद सौंदर्य उत्तम है। उदाहरण के लिए भारतेन्दु के

ये शेर देखें जा सकते हैं-दिल मेरा ले गया दग़ा कर के,बेवफा हो गया वफ़ा कर के। उनके एक शेर में प्रेम के साथ प्रकृति भी साकार हो गई है-अजब जोबन है गुल पर आमदे फसले बहारी है,शिताब आ साकिया गुलरू की तेरी यादगारी है। भारतेन्दु के समकालीन ,गोपाल लाल गुल की ग़जलों का संग्रह गुलबहार नाम से प्रकाशित है, जिनकी अधिकांश ग़ज़लें प्रकृति और प्रेम पर है। द्विवेदी युग के लाला भगवानदीन प्रेमघन से प्रभावित हुए।द्विवेदी युग हिन्दी भाषा और हिन्दी सहित्य की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। इस काल ने हिन्दी साहित्य को गंभीर निबंधकार, समालोचक, तो दिए ही भाषा की दृष्टि से भी हिन्दी समृद्ध बनी। द्विवेदी कृत सरस्वती पत्रिका ने काव्य की अन्य विधाओं के साथ ग़ज़ल को भी स्थान प्रदान किया। इस समय के लाला भगवानदीन, और गया प्रसाद शुक्ल सनेही महत्वपूर्ण गज़लकार साबित हुए। लाला भगवानदीन की ग़ज़लों के बारे में इन्द्रनारायण सिंह ने लिखा है कि दीन जी की हिन्दी ग़ज़लों में देश की स्थिति, पारिवारिक और सामाजिक संबंध के साथ प्रेम और सौन्दर्य की भावनाओं की भी अभित्यक्ति हुई है। दीन का ये मशहूर शेर तो सबकी जुबान पर है-तुने पांवों में लगाई मेहंदी,मेरी आंखों में समाई मेहंदी। इस समय के हिन्दी ग़ज़लकारों में गयाप्रसद्शुक्ल शुक्ल सनेही जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। वे त्रिशूल नाम से ग़ज़लें भी लिखते थे। इसी दौर में रामनरेश त्रिपाठी, और सत्यनारायण कविरत्न की भी ग़ज़लें पढ़ने को मिलती हैं। समय के साथ हिन्दी ग़ज़ल अपनी जड़ें जमाती गई और छायावाद में इसका और भी मज़बूत रूप देखने को मिलता है। सरदार मुजावर के अनुसार-हिन्दी की छायावादी ग़ज़लों का विषयगत परिप्रेक्ष्य विविधतापूर्ण रहा है। ये विविधताएं छायावादी ग़ज़ल को एक विशिष्टता प्रदान करती हैं। छायावादी कवि निराला ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम और श्रृंगार को एक प्रमुख विषय के रूप में चुना है। उनके कुद शेर देखे जा सकते हैं-तुम्हें देखा तुम्हारे स्नेह के नयन देखे,देखी सलिला नलिनी के सलिल शयन देखे । ठीक इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद ने भी संध्या रूपी युवती के माध्यम से प्रकृति के उद्दीपन के साथ प्रणय भाव की व्यंजना की है-अस्ताचल पर युवती संध्या की खुली अलक घुंघराली है,लो मणिक मदिरा की धारा अब बहने लगी निराली है। शमशेर हिन्दी के ऐसे शयर हैं, जिन्होंने उर्दू ग़ज़ल का बारीकी से अध्ययन किया है इसलिए उनकी ग़ज़लों में उर्दू वाला लबो लहज़ा पाया जाता है। विश्वनाथ त्रिपाठी ने भी कहा है कि शमशेर उर्दू में छंदबद्ध ग़ज़ल कहते थे।

शमशेर की शयरी को ज्ञानप्रकाश विवेक ने तलाश की शायरी माना है। उनमें एक बेचैनी है, यह बेचैनी अपने लिए भी

है, और समाज के लिए भी ।छायावादोत्तर काल में हिन्दी को ग़ज़ल के सबसे बड़े नायक दुष्यंत कुमार प्राप्त हुए। हिन्दी ग़ज़ल सम्राट दुष्यंत ने अपना साहित्यिक जीवन बारह वर्ष की अवस्था में ही प्रारंभ कर दिया था। एक समय ऐसा आया जब हिन्दी ग़ज़ल का मतलब ही दुष्यंत समझा जाने लगा। दुष्यंत की ग़ज़लों में जहां आम आदमी की विवशता, संघर्ष, घुटन, कुंठा, क्रांति तथा बेचैनी का रूप है। वहीं प्रेम और प्रकृति का खुशरंग भी पूरी शिद्दत के साथ मौजूद है। दुष्यंत के संबंध में डॉ.विनीता गुप्ता लिखती है कि दुष्यंत की ग़ज़लों में जहां प्रेम की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। वहां उसका उदात्त भावनात्मक पक्ष भी उभर कर सामने आता है। हिन्दी का मौजूदा वक्त ग़ज़ल के लिहाज से अपने स्वणिर्म काल में है। हिन्दी कविता की साहित्यिक विधा के रूप में ग़ज़ल ने अब पूरी पहचान बना ली है। आज की हिन्दी ग़ज़ल जीवन के विविध पक्षों का चित्रण करती है। जन-सामान्य के संघर्ष, उसकी पीड़ा, घात-प्रतिघात को हिन्दी ग़ज़ल ने मजबूती के साथ उठाया है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में जो प्रेम का रूप है उसमें पूरी नफ़ासत और नज़ाकत है। वास्तव में प्रेम एक शाश्वत सत्य है।

विषय चयन की प्रेरणा -

हिन्दी ग़ज़ल का बस एक शेर ही सत्ता के परखच्चे उड़ाने की क्षमता रखता है मगर ग़ज़ल सम्बंधी मान्यताएं आज भी श्रृंगार के खूंटे से बंधी हैं। हिन्दी ग़जल मानव के हर भाव को सहजता से व्यक्त कर सकती है। शोधार्थी हिन्दी ग़ज़ल की इस शक्ति से आम जन को परिचित कराना चाहता है। हिन्दी ग़ज़ल एक मजबूत सामाजिक पृष्ठभूमि रखती है। शोधार्थी हिन्दी ग़ज़ल के इस पहलू को उजागर करना चाहता है और साथ ही आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल परंपरा में हिन्दी उर्दू के मसले पर दृष्टि डालना चाहता है।यह शोधार्थी का मौलिक प्रयास होगा ,ग़ज़ल केवल महताब नहीं आफताब भी हैऔर ग़ज़ल केवल जुल्फों का जाल भी नहीं मशाल भी है ।

शोध विषय का उद्देश्य एवं महत्व -

मेरा शोध विषय है, ' आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल परंपरा: सहभागिता और सामाजिक सरोकार ' । जां निसार अख़्तर ने कहा है -**" हमसे पूछो ग़ज़ल क्या है, ग़ज़ल का फ़न क्या है,चंद लफ्ज़ों में जैसे कोई आग छुपा दी जाए"** । ग़ज़ल महज़ महबूब की बातें नहीं,एक सामाजिक क्रांति है। ग़ज़ल का हर शेर स्वतंत्र होता है और एक एक ग़ज़ल एक तीर से कई निशाने

लगा सकने की तौफीक रखती है। हिन्दी ग़ज़ल ने केवल श्रृंगार नहीं,राजनीतिक चेतना,सामाजिक चेतना और वंचित समाज के उत्थान में भी झंडे गाड़े हैं। हिन्दी ग़ज़ल बेशक उर्दू ग़ज़ल से प्रभावित हुई परंतु उसने ग़ज़ल को नई पहचान दी। हिन्दी भी ग़ज़ल की एक सशक्त परंपरा रखती है। दुर्भाग्यवश ग़ज़ल श्रृंगार के ढांचे में ही समा पाने वाली मानी जाती है परन्तु ग़ज़ल में सामाजिक चेतना अद्वितीय है। प्रस्तावित शोध आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की सामाजिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का प्रयास करेगा और हिन्दी ग़ज़ल में सहभागिता के स्वर को दर्शायेगा। इसी क्रम में, आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में उर्दू के मसले पर भी प्रकाश डाला जायेगा।

शोध विषय पर हुए पूर्ववर्ती शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता -

1. हिन्दी ग़ज़ल के विविध आयाम

   शोधार्थी - मुजावर सरदार, शोध निर्देशक - कोटवागे वेंकटेश

   शिवाजी विश्विद्यालय

2. हिन्दी ग़ज़ल का साहित्यिक अनुशीलन

   शोधार्थी -राणा नकवी ,शोध निर्देशक - डॉ.धर्मध्वन त्रिपाठी

   कानपुर विश्विद्यालय

3. हिन्दी ग़ज़ल का उद्भव और विकास

   शोधार्थी -रोहिताश्व कुमार अस्थाना, शोध निर्देशक - डॉ. वंश गोपाल

4. इक्कीसवीं सदी की प्रथम दशक की हिन्दी ग़ज़ल

   शोधार्थी - गोरे मृणाल , शोध निर्देशक - डॉ. भगवान गंहांडे

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्विद्यालय

मेरा शोध कार्य पूर्ववर्ती शोध कार्यो से भिन्न और मौलिक होगा।मेरा लक्ष्य आधुनिक हिंदी ग़ज़ल के सामाजिक,सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सरोकार को दर्शाना है।स्वाधीनता पूर्व और स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी ग़ज़लों की प्राथमिकता पर भी बल दिया जायेगा।इसी क्रम में ग़ज़ल के हिन्दी उर्दू विवाद पर भी दृष्टि डाली जायेगी।मेरा शोधकार्य महज़ ग़ज़ल परंपरा का आख्यान नहीं, ग़ज़ल की सामाजिक उपादेयता का प्रमाण होगा।मेरा शोधकार्य आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल को आम आदमी

की पीड़ाओं की अभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से देखने का एक मौलिक और महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

शोध विषय की आवश्यकता -

आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल आज के समय में एक महत्वपूर्ण विधा है। ग़ज़ल की परिभाषा है महबूब से बातें करना परंतु समय और संदर्भ के साथ महबूब का अर्थ बदलने लगा है। हिन्दी ग़ज़ल को पारंपरिक पूर्वाभासों से मुक्त कराने की आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए हिन्दी ग़ज़ल के राष्ट्रीय,सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष को उभारना होगा।साथ ही यह भी ध्याननीय है कि आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल,उर्दू ग़ज़ल की परछाईं नहीं है। वह अपनी ही मौलिक शब्दावली ,बिंब और प्रतीक रखती है।आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल के इस पक्ष पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

साहित्य सर्वेक्षण -

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्विद्यालयों से प्राप्त की गई है।

1.डी. ई. आई. दयालबाग़ विश्विद्यालय ,आगरा

2.केंद्रीय हिन्दी संस्थान ,आगरा

3.केंद्रीय विश्विद्यालय,कोरापुट, ओड़िशा

4. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन,रायपुर

5.ब्रह्मपुर विश्विद्यालय,ब्रह्मपुर

शोध प्रविधियां –

साहित्य में निरंतर अनुसंधान की प्रक्रिया चलती रहती है।साहित्य जीवन यापन का हुनर सिखाता है।इस दृष्टि से साहित्य में शोध का महत्व अधिक बढ़ जाता है।अनुसंधान की बहुत सी विधियां शोध के दौरान प्रयोग में लाई जाती हैं।प्रस्तावित शोध विषय में आवश्यकता अनुसार यथा उचित शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।शोध कार्य को पूर्ण करने में मुख्यतः निम्नलिखित प्रविधियां का प्रयोग किया जायेगा।

विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि

ग़जल एक साहित्यिक विधा है।साहित्य समाज के लिए हितकारी होता है।ज़ाहिर है कि ग़ज़ल परंपरा ने सामाजिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण इस प्रविधि के अंतर्गत किया जायेगा। अन्य विधाओं की तरह ग़ज़ल भी एक मुख्य धरा की विधा है,इस प्राविधि के अंतर्गत इसका

विश्लेषण किया जायेगा।

व्याख्यात्मक शोध प्रविधि

व्याख्यात्मक शोध में मानव जीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर, चाहें वे साहित्य,समाज विज्ञान या शुद्ध विज्ञान से संबंध रखती हों,अनुसंधान किया जाता है। आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल ने सदा ही अवाम के विचारों को स्वतंत्र करने का प्रयास किया है।इस शोध प्रविधि में समाज की चित्तवृत्तियो के क्रमिक,आवश्यक और उचित परिवर्तनों में हिन्दी गज़ल की सहभागिता का चित्रण किया जायेगा।

वर्णनात्मक शोध प्रविधि

आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में मानव जीवन की की हर संवेदना की गहरी अभिव्यक्ति मिलती है।वर्णात्मक शोध प्रविधि में हिन्दी ग़ज़ल को एक सशक्त विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जायेगा।इसी क्रम में हिन्दी गज़ल और गजलकारों के सामाजिक योगदान पर भी प्रकाश डाला जायेगा।

रूपरेखा

छायावादोत्तर कालीन हिंदी ग़ज़ल में संवेदना और शिल्प –

शोध की कार्य योजना एवं प्रकरण विभाजन : -

प्रथम अध्याय -हिन्दी ग़ज़ल का आरंभ व अधुनातन परंपरा

(क) ग़ज़ल का अर्थ,स्वरूप और हिन्दी ग़ज़ल की विकसित परंपरा

(ख) ग़ज़ल के प्रमुख अंग

(ग) हिन्दी ग़ज़ल की विशिष्टता

द्वितीय अध्याय -स्वाधीनता पूर्व आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में सामाजिक और राष्ट्रीय स्वर

(क) स्वाधीनता पूर्व का भारतीय समाज व आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल

(ख) स्वाधीनता पूर्व का समय व ग़ज़ल का सामाजिक पक्ष

(ग) स्वाधीनता पूर्व आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल सम्बंधी मूल दृष्टि

तृतीय अध्याय - स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी ग़ज़ल में राष्ट्रीयता और सामाजिकता का मुखर स्वर

(क) नये समाज की विसंगतियां व हिन्दी ग़ज़ल

(ख) स्वतंत्रयोत्तर भारतीय समाज के स्वप्न व परिणाम

(ग) वैश्विक ग्राम की संकल्पना व भारतीय जनजीवन में हिन्दी ग़ज़ल

चतुर्थ अध्याय – छायावादोत्तर हिन्दी ग़ज़ल में प्रेम का स्वरुप

(क) छायावादोत्तर हिन्दी ग़ज़ल में प्रेम भाव की अभिव्यक्ति

(ख) छायावादोत्तर हिन्दी ग़ज़ल का रोमानी पक्ष

(ग) छायावादोत्तर हिन्दी ग़ज़ल की शिल्पगत प्रयोगशीलता

पंचम अध्याय -आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की शिल्पगत प्रयोगशीलता

(क) आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल की भाषा और बिंब

(ख) आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में प्रतीक और अलंकार

(ग) हिन्दी गज़ल का छंदानुशासन

उपसंहार -

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

शब्द कोश

विश्व कोश

पत्र पत्रिका

प्रश्नावली

वेबसाइट

साक्षात्कार

नोट - शोध निर्देशक के सुझाव से अध्याय एवं शोध कार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधार ग्रंथ –

बेला,निराला, लोकभारती प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1946

साये में धूप ,दुष्यंत कुमार,राधाकृष्ण प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1975

नीम की पत्तियां ,राम कुमार कृषक,राजकमल प्रकाशन,प्रथम संस्करण - 1984

धूप के हस्ताक्षर,ज्ञान प्रकाश,कादंबरी प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1984

धरती की सतह पर,अदम गोंडवी,अनुज प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1986

चांदनी का दुख, ज़हीर कुरेशी,पराग प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1986

फ़िर वही आकाश,राम कुमार कृषक,राधाकृष्ण प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1991

समंदर ब्याहने आया नहीं है,ज़हीर कुरेशी, अनय प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1992

धुआं चीरते हुए, डॉ. उर्मिलेश,मंजुल प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1993

इस मुश्किल वक्त में,ज्ञान प्रकाश विवेक, अयन प्रकाशन,प्रथम संस्करण -1996

एक हाथ की ताली, सूर्यभानु गुप्त,वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण -2002

आईने आह भरते हैं, डॉ.उर्मिलेश,मंजुल प्रकाशन,प्रथम संस्करण -2006

गुफ्तगू अवाम से है,ज्ञान प्रकाश विवेक,वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण -2008

समय से मुठभेड़, अदम गोंडवी,वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण -2010

संदर्भ ग्रंथ –

1.हिन्दी उर्दू की प्रगतिशील कविता, वजाहत असगर,1981 संस्करण

2.उर्दू की बहरीन शायरी,प्रकाश पंडित, हिन्दी पॉकेट बुक्स,1985 संस्करण

3.अमीर खुसरो,मोहम्मद मलिक, राजपाल ऐंड संस,1994 संस्करण

4.हिन्दी गज़ल: दशा और दिशा, डॉ.नरेश,वाणी प्रकाशन,2005 संस्करण

5.हिन्दी ग़ज़ल: ग़ज़लकारों की नज़र में,वाणी प्रकाशन,2006 संस्करण

6.हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा,विवेक,पंचकूला अकादमी,2006 संस्करण

7.उर्दू शायरी: आज़ादी के बाद, ज़ाफर रजा, लोकभारती प्रकाशन,2010 संस्करण

पत्र पत्रिकाएं -

1..आजकल

2.आलोचना

3.अंभै सांचा

4.उर्दू अदब

5. ग़ज़ल गरिमा

6.गोदारण

7.धरती

8.नई धारा

9.वागर्थ

10.सारिका

11. संवेद

12. हिन्दी ग़ज़ल

13.हंस

शब्दकोश

1.उर्दू हिन्दी शब्दकोश – उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

2.वृहत प्रामाणिक हिन्दी कोश लोकभारती प्रकाशन

3.मानक सामान्य हिन्दी -डॉ. पृथ्वीराज पांडेय

वेबसाइट

1.www.rekhta.org

2.www.hindisahityakunj.com

3.www.kavitakosh.org